राज्य परिशिष्ट 3

(रोमियों के नाम पत्री)
रोमियों की पत्री का परिचय

परिचय।

हम पत्री के आरम्भ को देखेंगेः रोमियों की पत्री को किसने लिखा? कब और कहाँ लिखी गई? कैसे यह पत्री हिस्सों में बँटी हुई है? पत्री का सन्दर्भ क्या है? पत्री के मुख्य विषय क्या है? कैसे हम पत्री के कठिन खण्डों का अनुवाद कर सकते हैं?

क. रोमियों की पत्री के लेखक

लेखक यहूदी है (रोमियों 9:3-4), जो पुराने नियम के इब्रानी और यूनानी दोनों भाषा से परिचित थे, यहूदी विचारों और पूर्वाग्रहों और यूनानी संसार के साथ है। रोमियों की पत्री के लेखक की प्रमाणिकता उसी प्रकार निश्चित है जैसे बाइबल की दूसरी किताबों के लेखक की। यहां तक की प्राचीन दुनिया में भी। पत्री में, पौलुस स्वयं को रोमियों की पत्री के लेखक के रूप में परिचित कराता है (रोमियों 1:1) और कई बार व्यक्तिगत या सीधे तौर पर बात करता है। आरम्भिक कलीसिया के सभी पासबानों ने कहा कि रोमियों की पत्री का लेखक पौलुस है।

ख. रोमियों की पत्री के प्राप्तकर्ता

रोम के अन्दर मण्डली का आरम्भ कैसे हुआ?

1. <u>कई देशों में यहूदियों का तितर बितर होना।</u>

यहूदी के बिखरने का आरम्भ(8वीं शताब्दी ई0 पू0) में अश्शूर और बेबीलोन में (7 से 6वीं शताब्दी) बन्धुआई में जानें से हुआ। तितर बितर होने के कारण यहूदी लोग बेबीलोन(वर्तमान इराक) फारस(वर्तमान ईरान) रोम, सूडान, सीरिया, एशिया द्वीप(वर्तमान तुर्की) ग्रीस और इटली जैसे अलग देशों में ही निरन्तर रहने लगे। <u>परमेश्वर की योजना में इस "बिखराव" के कारण ही पूरे रोमी साम्राज्य में सुसमाचार बहुत तेजी से फैल गया।</u> रोमी साम्राज्य में यहूदियों को हर जगह यह अनुमति मिली थी कि वे अपने धर्म का अभ्यास अपने रीति-रिवाजों के अनुसार कर सकते हैं। उन्होंने गैर यहूदी राष्ट्रों में हर जगह पर आराधनालय (मिलने का स्थान) बनवाये। बहुत से गैर यहूदी आराधनालयों में आने लगे, वे पूर्ण शुद्धता की तरफ (एकमात्र परमेश्वर की आराधना करना) आकर्षित हुए और उन्होंने यहूदी मत को अपना लिया।

जिन गैर-यहूदियों ने खतना करवाया और वह पुराने नियम की पूर्ण व्यवस्था को मानने लगे और उन्हें यहूदी धर्म को अपनाने वाले अर्थात "proselytes" (यूनानीः परोजलूटोई)(वे लोग जो एक धर्म से दूसरे धर्म में आ गये वे यहूदियों में परिवर्तित हो गये) कहा गया (प्रेरितों. 2:10, 13:43)।
गैर-यहूदी जिन्होनें अद्भभुत परमेश्वर पर विश्वास किया और दस आज्ञाओं को स्वीकार किया (निर्गमन 20:1-17), परन्तु जिनका खतना नहीं हुआ था और जिन्होनें बाकि संस्कारों पालन कभी नहीं किया

था उन्हें "परमेश्वर के आराधक" कहा जाता था (यूनानीः सेबोमेनाई)(प्रेरितों. 16:14)। प्रेरितों. 13:42-43 में लोगों ने (संभवतः पुराने अन्यजाति) पौलुस और बरनाबास से विनती की कि वे आराधनालय में आकर प्रचार करें। जब उन्होनें ऐसे किया, बहुत से यहूदी, यहूदी धर्म अपनाने वालों और परमेश्वर के आराधकों ने जो अन्यजातियों में से आये थे उनका अनुसरण करने लगे। पौलुस और बरनबास ने उनसे निवेदन किया कि वे परमेश्वर के अनुग्रह में बनें रहें (जिसका अर्थ है कि, वे मसीह सन्देश में बनें रहें)।

प्रेरितों के यहूदी होने के कारण, वे कभी भी आराधनालय में जा सकते थे, जहाँ वे सुसमाचार का प्रचार कर सकते और वे अधिकारियों के सन्देह किये बिना लोगों से मिल सकते थे। इन यहूदी धर्म अपनाने वाले और परमेश्वर के आराधकों को अच्छी तरह से तैयार किया गया था जिससे सुसमाचार ग्रहण किया जाए और अन्यजातियों के बीच नई मण्डलियों की स्थापना की बुनियाद रखी जा सके (प्रेरितों. 13:43-49)।

2. रोम में यहूदी।

वहाँ बहुत से यहूदी थे जो रोम में यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गये, जो रोमी साम्राज्य की राजधानी है। मौलिक रूप से वे कैदी बन कर आए थे,परन्तु उनकी आज़ादी के बाद यहूदी समुदाय तिबर नदी के एक बड़े रोम के हिस्से में बस गये। उनका रोमी लोगों के ऊपर महत्वपूर्ण प्रभाव था। रोमियों के लेखक ने आराधनालयों के बारे में कहा जो मिलने के लिए लोकप्रिय स्थान था, उपहास करने वाले रोमी यहूदी बन गये और उन्होने रोम में यहूदी धर्म अपनाने वालों के बारे में लिखा कि उन्होनें यरूशलेम को अपने उपहार भेजे (प्रेरितों. 11:28-30)।

3. रोम में मण्डली का आरम्भ होना।

यह ज्ञात नहीं है कि रोम में पहली बार सुसमाचार कैसे पहुचां था।

(1) यीशु की सेवकाई।

रोम में आरम्भिक सेवकाई स्वयं यीशु द्वारा ही की गयी थी। यीशु ने गैर-यहूदी में सेवकाई की (मत्ती 8:5-11, यूहन्ना 4:7, 12:20-21) उदाहरण के लिए, मत्ती 8:5-12 में यीशु ने रोमी सरदार के दास को चंगा किया।

(2) पतरस की सेवकाई।

पिन्तेकुस के पहले दिन (मई ई0 सन् 30) बहुत से यहूदी जो रोम से पर्व को मनाने के लिए उपस्थित थे वे यहूदी मत में आ गये (प्रेरितों. 2:10-11) उनमें से कुछ इस तीन हजार की भीड़ में थे जिन्होनें पतरस के प्रचार के बाद मसीहियत को ग्रहण कर लिया था और जब वे रोम वापिस गये तो अवश्य उन लोगों ने प्रचार किया होगा।

यह धारणा कि रोम में पहली मण्डली प्रेरित पतरस ने स्थापित की थी,सम्भव सत्य थी और यह कुरिन्थ वासी डायोनिसियस के कथन के अनुसार ई.प. दूसरी शताब्दी के दूसरे हिस्से में हुआ था। यह घटना प्रेरितों के काम 1 से 12 अध्यायों के बीच ई0 सन् 36 और ई0 सन् 44 में हुई। यह सम्भव है कि इन वर्षों के दौरान, प्रेरित पतरस ने एक या उससे अधिक बार रोम की यात्रा की होगी ताकि वह रोम में वहां पहले से बसे मसीहीयों के बीच में मण्डली स्थापित कर सके। ई.प. सन 36

में, पतरस, नवदीक्षित पौलुस से मिलने के लिए यरूशलेम में गया था (प्रेरितों. 9:26-28, गलातियों 1:18)। ई.प. सन् 40 में, पतरस ने पहली बार कैसरिया में अन्यजातियों के बीच प्रचार किया (प्रेरितों. 10:1-48)। यह कैसर क्लाउदियुस (प्रेरितों. 11:28) और राजा हेरोदेस (प्रेरितों. 12:1)के राज्य के शुरू होने से पहले था, जिसने क्लाउदियुस से यहूदियों पर अधिकार लिया था। 41ई.प. से यरूशलेम में यहूदियों का रवैया प्रेरितों के विरोध में बुरी तरह से बदल गया था। 44 ई.प. में पतरस फिर से यरूशलेम में आया जब हेरोदेस के द्वारा पतरस को बंदी बनाया गया और जेल में डाल दिया गया और मण्डली ने उसके लिए मरकुस की माँ के घर में प्रार्थना की और आलौकिक हस्तक्षेप के बाद जब उसे रिहा कर दिया गया, तब पतरस दूसरी जगह के लिए चला गया (प्रेरितों. 12:1-17)। क्योंकि बहुत से मसीही उनके घर में इकट्ठे हुए थे, ऐसा लगता है कि मरकुस की जान पहचान दूसरे प्रेरितों और यीशु मसीह के आरम्भिक चेलों के साथ भी थी।

(3) मरकुस की सेवकाई।

आरम्भिक कलीसिया के फ़ादरों की गवाहियों के अनुसार, मरकुस ने पतरस के साथ रोम में सेवा की। यह लगभग ई0 सन् 44 में हुआ होगा जब प्रेरित पतरस यरूशलेम को छोड़कर दूसरे स्थान के लिए चला गया था।

ई0 सन् 300 में फ़ादर ईयुसबियस ने लिखा, "पतरस के चेले और अनुवादक मरकुस ने उन्हें खुद लिखित रूप में वे दस्तावेज दिये थे (मरकुस का सुसमाचार) जिन्हें पतरस द्वारा प्रचार किया गया था।" सन् 190 में अलेक्जेंड्रिया के फ़ादर क्लेमेंट ने लिखा कि "मरकुस रचित सुसमाचार को लिखने का अवसर निम्नलिखित थाः पतरस ने सार्वजनिक रूप से रोम में प्रचार किया.... मरकुस लम्बे समय तक उसके साथ साथ रहा और जो कुछ उसने सुना था उसे याद रखा, जो कुछ पतरस ने कहा था, वहाँ उपस्थित बहुत से लोगों ने उससे आग्रह किया कि वह उन बातों को लिखे जो बातें उसने पतरस से सुनी हैं। उसने वैसा ही किया और उसने सुनने की इच्छा रखने वाले लोगों को वह सुसमाचार सुना दिया। जब पतरस को यह पता चला तब उसने इसके विषय में न तो मना किया और न तो उसने इस बात को बढ़ावा दिया।"

कलीसिया के फादर पापीया, जो प्रेरित यूहन्ना के चेले थे, उन्होंने सन् 115 में लिखा, "मरकुस पतरस का अनुवादक बना और उसने उन सारी बातों को सही रूप से लिखा... जो उसने प्रभु से सुनी और जो कुछ उसे याद रहीं... मरकुस ने सावधानी के साथ ध्यान देकर सुना और लिखा ताकि कुछ भी छूट न जाए और कुछ अतिरिक्त न जुड़ जाए।" प्राचीन इतिहासकारों गवाहियों और कही बातों का इनकार करने का कोई कारण नहीं है कि मरकुस ने इस सुसमाचार को लिखा है और यह रोम में पतरस की शिक्षाओं और प्रचार पर पूर्णतः आधारित है। मरकुस ने इस सुमासमाचार को लगभग सन् 44-46 में रोम में रोमी लोगों के लिए लिखा।

(4) दूसरे मसीहियों की सेवकाई।

लोगों ने रोमी साम्राज्य के सभी हिस्सों में सड़को और कार्गो जहाजों के नेटवर्क के माध्यम से बड़े पैमाने पर यात्रा की जो हर वर्ष मार्च में होती और नवम्बर मध्य तक चलती थी। नया नियम बहुत-सी यात्राओं को दिखाता हैः प्रिस्किल्ला और अक्विला ने अपने जीवन के अलग-अलग समय में पोन्टस से (एशिया द्वीप) रोम की यात्रा की, रोम से कुरिन्थ (प्रेरितों. 18:2) कुरिन्थ से इफिसुस (प्रेरितों 18:18-19; 1कुरिन्थियों 16:19) रोम से इफिसुस (2तीमुथियुस 4:19) की ।

और लूका तीमुथियुस तीतुस और स्वयं पौलुस ने भी बड़े पैमाने पर यात्राएं की (2कुरिन्थियों 11:25-26)। रोम और उसके सभी प्रांतों के बीच निरन्तर यातायात मौजूद था और लोगों ने वहां बहुत यात्राएं की। मिशन विचारा धारा रखने वाली कलीसिया जो अन्ताकिया (सीरिया) में थी उनके पास रोम से यात्रा करने वाले लोग निश्चित रूप से आते-जाते रहते होंगे जो सन्देश को फैला सकते और इस तरह रोम में मौजूदा कलीसिया को मज़बूत कर सकते थे। इसी प्रकार से फिलिप्पी की कलीसिया, कुरिन्थ और इफिसुस की कलीसिया ने भी अच्छी तरह से सहयोग किया होगा, क्योंकि इन महान शहरों और रोम के बीच संचार व्यवस्था निरन्तर बनी हुई थी।

पौलुस ने रोमियों 1:8 में लिखा कि रोम के विश्वासियों के विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही थी। इसलिए रोम की कलीसिया काफी समय तक बनी रही होगी। रोमी लेखक, सुतोनियस (विटा क्लोडि में 15:4, सन् 75-160) ने लिखा, जबकि "चरेस्टुस" को भड़काने के द्वारा यहूदी लोग निरन्तर गड़बड़ी फैला रहे थे, इसलिए क्लोउडियस ने उन्हें रोम से बाहर निकाल दिया।" वह उन यहूदियों के बीच झगड़े का जिक्र कर रहे थे जो यहूदी मसीही बन गये थे और यहूदी जो नये विश्वास का विरोध करते थे। यह सन् 49 में हुआ, इस तरह से सम्भावना है कि अक्विला और प्रिस्किल्ला भी सन् 49 में रोम से कुरिन्थ में आने से पहले मसीही बनें होंगे। निष्कर्ष यह है कि रोम में मण्डली सम्भवतः मुख्य रूप से सामान्य मसीहियों की गवाही के कारण अपने अस्तित्व में आई थी।

(5) पौलुस की सेवकाई।

सन् 47 से 57 के बीच में पौलुस द्वारा की गयी पहली तीन मिशनरी यात्राओं के दौरान, पौलुस ने रोम की मण्डली के विश्वासियों के साथ जान पहिचान बना ली थी (रोमियों 16:3-15)। तौभी, वह खुद सन् 60 में पहली बार एक कैदी के रूप में रोम आया था जब उसने रोम के कैसर से इस मामले में सुनवाई करने की अपील की थी (रोमियों 25:1-12)। फिर भी रोम में पौलुस कैद से ही प्रभावशाली ढंग सुसमाचार की घोषणा कर रहा था इस वजह से पूरे महल के सुरक्षा कर्मियों को यह पता चल गया था कि पौलुस अपराध के लिए नहीं बल्कि मसीही होने के कारण कैद किया गया था (प्रेरितों. 28 और फिलिप्पियों 1:12-14) रोम की कैद से पौलुस ने कुलुस्सियों, फिलेमोन, इफिसियों और फिलिप्पियों को सन् 60-61 में पत्रियाँ लिखीं। अन्ततः रोम में दूसरी बार जेल में डाले जाने के समय पौलुस ने तीमुथियुस की दूसरी पत्री लिखी जो उसकी सन् 64/65 में आखरी पत्री थी। पतरस उस समय रोम में नहीं था जब पौलुस रोम में था तो अन्यथा वह पतरस के बारें में जरूर लिखता।

(6) रोम में प्रेरितों की सेवकाई के बारें में मसीही धारणा ।

जिस समय में प्रेरित पौलुस ने रोम में सन् 61 से 64 के बीच अपने दो बार कारावास के दौरान यात्रा की, उसी बीच प्रेरित पतरस और मरकुस भी रोम में थे (1पतरस 5:13)। पतरस ने अपनी पत्री सन् 62-63 में रोम से और उसकी दूसरी पत्री भी लगभग सन् 64 में रोम से ही लिखी। चौथी शताब्दी में लैटिन फादर, एम्ब्रोसियास्टर ने रोम पर अपने व्याख्यात्मक विवरण में लिखा कि रोम में पायी जाने वाली कलीसिया प्रेरितों के द्वारा स्थापित नहीं की गई थी, लेकिन कुछ यहूदी मसीहियों द्वारा स्थापित की गयी थी जिन्होंने मण्डली पर अपने "यहूदी मत के रूप" को थोप दिया था (इस कथन की तुलना प्रेरितों के काम 15:1 और 21:24 से करें)। रोम में मण्डली के ऊपर सन् 42 से 67 के बीच 25 वर्ष की अवधि में पतरस प्रेरित को बिशप के रूप में ठहराये जाने का दावा बहुत संदिग्ध है।

क्योंकि अगर ऐसा होता तो प्रेरित पौलुस ने रोमियों की पत्री में और लूका ने भी अपनी पुस्तक प्रेरितों के काम में इतने महत्वपूर्ण तथ्य को छोड़ा नहीं होता![1] इसके, अलावा बिशप केवल दूसरी शताब्दी के दौरान अस्तित्व में आए।

4. रोम में कलीसिया की स्थिति।

रोम की कलीसिया में अधिकांश गैर यहूदी धर्मान्तरित लोग शामिल थे और अधिकांश यहूदी धर्मान्तरित लोग शामिल थे (रोमियों 1:5-6,13, 11:13, 15:9-18)। इस कारण कलीसिया के भीतर तनाव पैदा हो गया।

(1) प्रेरित पौलुस ने आमतौर पर यहूदियों और यहूदी धर्म के धर्मान्तरित लोगों द्वारा आयोजित कुछ विचारों का सामना किया।

यहूदी लोग विश्वास करते थे कि अब्राहम के शारीरिक वशंज होना, खतना कराना और व्यवस्था को मानना ही परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है। व्यवस्था के यहूदी धार्मिक शिक्षकों ने सिखाया कि "परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की थी कि वह उसके वंशजों को अब्राहम धार्मिकता के आधार पर बचाएगा फिर चाहे वे कितने भी ईश्वर रहित और पापी क्यों न हों।" उन्होंने यह भी सिखाया की "जिसका खतना हुआ है वह व्यक्ति कभी नरक नहीं जाएगा" और "सारे इस्राएली अनन्त जीवन के भागी होंगे।" यहूदियों का विश्वास है कि मसीह के राज्य की आशीषें यहूदियों और जो यहूदी धर्म को स्वीकार करता है उन्हीं तक सीमित रहेंगी।

हांलाकि, इस राज्य में एक अन्तर होगा। इस राज्य में यहूदी लोग गैर-यहूदी से उच्च होंगे। जो धर्मशासित परमेश्वर का राज्य है उसकी सारी आशीषों के साथ सिर्फ इस्राएल का होगा (इस प्रकार, "प्रथम श्रेणी के यहूदी")! अन्यजाति (गैर-यहूदी) केवल यहूदी बनकर इस राज्य में एक अधीनस्थ स्थान प्राप्त कर सकते हैं (इस प्रकार, "यहूदी धर्म अपनाने वाले द्वितीय श्रेणी के यहूदी")।

यहूदियों का विश्वास था कि यहूदी होने के नाते वे अन्यजातियों की सरकारों के अधिकार के लिए हर कर्तव्य से आज़ाद हैं। उन्हें इन गैर यहूदी सरकारों को कर का भुगतान करने पर भी सन्देह था और वे अन्यजातियों को तुच्छ जाना करते थे! इसके कारण निरन्तर यहूदी वर्ग के अन्दर विद्रोह उत्पन्न हुआ और परिणामस्वरुप रोम से यहूदियों का सफाया हो गया और अन्त में 70ईस्वी में यरूशलेम और मन्दिर का विनाश हो गया।

(2) पौलुस प्रेरित ने अन्यजाति मसीहियों को यहूदी मसीहियों के पछतावे को न मानने के लिए फटकार लगाई।

"कमज़ोर मसीही " यहूदियों और यहूदी धर्म अपनाने वालों के बीच में से आये लोग थे। वे अभी भी व्यवस्था को मानते थे (ख़तना करना, सब्त के दिन के नियम, यहूदी त्यौहार के और यहूदी भोजन के नियमों को मानना)। मज़बूत विश्वासी आमतौर पर अन्यजातियों (रोमियों) में से निकले हुए विश्वासी थे जो यहूदियों की औपचारिक विधियों और व्यवस्थाओं से परिचित नहीं थे। पौलुस ने मज़बूत विश्वासियों से "कमज़ोर विश्वासियों" को अपने विचारों के द्वारा *(तुच्छ न समझें) नीचा न दिखाने* की आज्ञा दी (आमतौर पर यहूदियों से मसीह पर विश्वास करने वाले मसीही)। उसने कमज़ोर विश्वासियों

को भी आज्ञा दी कि वे विश्वास में दृढ़ मसीहियों का न्याय उनकी व्याख्या के अनुसार न करें (रोमियों 14:1 से 15:13)।

(3) प्रेरित पौलुस ने यह सिखाया कि गैर–यहूदियों और यहूदियों दोनों के उद्धार के लिए एक ही सुसमाचार है।

गैर यहूदियों और यहूदी दोनों ने पाप किया है और परमेश्वर की धार्मिकता के सिद्ध मानक (स्तर) और उनके जीवन के लिए परमेश्वर के लक्ष्य से रहित हो गये हैं (अर्थात् परमेश्वर की महिमामय चरित्र की विशेषताओं का अधिकारी होना)(रोमियों 3:23)। पुराने और नये नियम में अन्यजाति और यहूदियों को एक तरह से धर्मी (बचाया, उद्धार) ठहराये गये हैं, अर्थात् व्यवस्था के बिना यीशु मसीह पर और उसके सम्पूर्ण उद्धार के किए हुए कार्य पर विश्वास करने द्वारा (रोमियों 3:24–25,28)। जितने गैर यहूदी और यहूदी यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे "सच में अब्राहम की सन्तान हैं" (रोमियों 4:11–12)। संक्षेप में, "अन्यजातियों और यहूदियों में कोई भिन्नता नहीं है।[2] हर एक व्यक्ति जो प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पायेगा" (रोमियों 10:12–13)।

(4) पुराने नियम और नये नियम में कलीसिया को एक ही नाम से पुकारा जाता था।

- परमेश्वर का पहलौठा (निर्गमन 4:22, यिर्मयाह 31:9, इब्रानियों 12:23)
- परमेश्वर के पुत्र एवं पुत्रियाँ (यशायाह 43:6–7, 2कुरिन्थियों 6:18)
- यरूशलेम शहर को (परमेश्वर के लोगों का प्रतीक) स्त्री, दुल्हिन, पत्नी कहा गया है (यशायाह 54:1,5–6, प्रकाशितवाक्य 21:9–10)
- बारह गोत्र (उत्पत्ति 49:28, याकूब 1:1, प्रकाशितवाक्य 7:4, 21:12)
- याजकों का राज्य (निर्गमन 19:6, 1पतरस 2:9, प्रकाशितवाक्य 1:6)
- पवित्र लोग (निर्गमन 19:6, 1पतरस 2:9)
- चुने हुए लोग (व्यवस्थाविवरण 7:6, 1पतरस 2:9, तीतुस 2:14)(चुने हुए, विशेष लोग)
- परमेश्वर का निज धन (निर्गमन 19:5, व्यवस्थाविरण 7:6), "ऐसे लोग जो हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के स्वयं के लोग हैं" (तीतुस 2:14)। "परमेश्वर के निज लोग"(1पतरस 2:9)
- परमेश्वर की वाचा के लोग (लैव्यव्यवस्था 26:12, 2कुरिन्थियों 6:16)
- एक बिखरा हुआ राष्ट्र, भटकते हुए लोग, फैलाव में बिखर गये, अजनबी (व्यवस्थाविवरण 30:1, भजन. 105:10–13, यहेजकेल 12:15, एस्तेर 3:8, 1पतरस 1:1)
- परमेश्वर की कटनी का पहला फल (यिर्मयाह 2:3, याकूब 1:18)।
- भेड़ (एक झुण्ड) इस्राएल के भेड़ का भेड़शाला और दूसरे राष्ट्रों की भेड़ों के लिए भी भेड़शाला (यहेजकेल 34, यूहन्ना 10:16)
- इस्राएल (1शमूएल 7:23, गलातियों 6:14–16)
- यहूदी (जकर्याह 8:22–23, रोमियों 2:28–29)
- सिय्योन (परमेश्वर के लोगों का प्रतीक भी है)(यशायाह 51:16, यशायाह 52:7, इब्रानियों 12:22–24)

- वर्तमान यरूशलेम (यह व्यवस्था की गुलामी से नीचे था) और स्वर्गीय यरूशलेम जो ऊपर (गलातियों 4:25-26), जो स्वर्गीय यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:2), नया यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:2), पवित्र यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:10)
- परमेश्वर का मन्दिर (जो परमेश्वर के लोगों का प्रतीक भी है)(2कुरिन्थियों 6:16)
- यहूदी और गैर-यहूदी विश्वासी जो एक साथ वारिस है (परमेश्वर के लोग), वे एक देह के एक साथ सदस्य हैं, और मसीह यीशु में जो वायदा है उसे एक साथ साझा करते हैं (इफिसियों 3:6, 2कुरिन्थियों 1:20)
- मसीह (अभिषिक्त लोग) (इब्रानीःमशीची; यूनानीःक्रिस्टोई) (भजन. 105:15) (प्रेरितों.1:26)(क्रिस्टिआनोस) जो संसार में गैर-मसीही के बीच में रहते हैं।

यहूदी और गैर-यहूदी जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे एक साथ एक देह का निर्माण करते हैं जो परमेश्वर के लोगों की है, यह निम्नलिखित प्रतीकों द्वारा दर्शाया गया हैः

- एक झुण्ड (यूहन्ना 10:16)
- परमेश्वर की संतानों के साथ एक परिवार (गलातियों 3:26-29)
- एक नया मनुष्य, परमेश्वर का घर, आत्मा में परमेश्वर का निवास (इफिसियों 2:11-22)
- एक देह (1कुरिन्थियों 12:13, इफिसियों 3:6)
- एक अंजीर का पेड़ (यिर्मयाह 11:16-17, रोमियों 11:17-24)
- परमेश्वर के चुने हुए और पवित्र लोग (1पतरस 2:9-10)।
- एक नया यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:9-14, इब्रानियों 12:22-24) यहूदी और अन्यजातियों के लिए (गलातियों 4:21-31)

इसलिए

- परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों को (इस्राएल) *अन्त या प्रतिस्थापित नहीं किया गया* था।
- लेकिन उच्च स्तर पर *जारी रखा* गया जिसमें "छाया" "वास्तविकता" बन गई (कुलुस्सियों 2:17, इब्रानियों 9:7-10)
- और संसार के सभी राष्ट्रों को मसीह में विश्वासियों के साथ शामिल करने के लिए *बढ़ाया (विस्तारित)* किया गया था।
- दोनों यहूदी और गैर-यहूदी मिलकर परमेश्वर के लोगों को पूर्ण समान शर्तों पर बनाते हैं। (1कुरिन्थियों 12:13, इफिसियों 2:11-22, 3:2-6)।

ग. रोमियों की पत्री को लिखने की तारीख और स्थान

1. रोमियों की पत्री को लिखने की तारीख और स्थान।

उसके तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में पौलुस ने मकिदुनिया से कुरिन्थ कि यात्रा की (प्रेरितों के काम 20:2-3)। यह पौलुस की कुरिन्थ में तीसरी यात्रा थी। वह ई.56 की सदी से पहले कुरिन्थ में आ गया था और तीन महीने कुरिन्थ में ही रहा। सारी बातें मिलकर कुरिन्थ की ओर इंगित करती हैं

कि पौलुस ने रोम के लोगों के लिए यहीं से रोमियों की पत्री को लिखा था। पौलुस को यरूशलेम के गरीब मसीहियों के लिए इक्ट्ठा किया गया चन्दा भी मकिदुनिया और अखाया से प्राप्त हुआ था और यह दर्शाता है कि वह उस क्षेत्र में रहा होगा (रोमियों 15:25-26)। वह गयुस का इरास्तुस को अपना अभिवादन भेजता है (रोमियों 16:23) जो कुरिन्थ में थे (1कुरिन्थियों 4:20) पौलुस अपने अभिवादन में किंख्रिया का भी उल्लेख करता है (रोमियों 16:1) जो कुरिन्थ का पूर्वी भाग था।

2. रोमियों की पत्री को लिखने की तिथि।

क्योंकि पौलुस यरूशलेम में पिन्तेकुस्त से पहले पहुंचना चाहता था (प्रेरितों. 20:16), इसलिए उसने रोमियों की पत्री को कुरिन्थ से सर्दी के नज़दीक आने या 57ई. में वसंत की शुरूआत में लिखी होगी। यह आम तौर पर माना जाता है कि फीबे ने पौलुस की इस पत्री को कुरिन्थ से रोम तक पहुंचाया (रोमियों 16:1-2)। उसका उद्देश्य यह सिखाना था कि, "धार्मिकता अनुग्रह के द्वारा विश्वास से आती है"। रोमियों 15:23-24 में, पौलुस ने कहा कि रोमी साम्राज्य के पूर्वी हिस्से में उनका मिशनरी कार्य पूरा होने के करीब था और वह रोमी साम्राज्य के पश्चिमी भाग में मिशनरी कार्य शुरू करने की योजना बना रहा था, विशेष रूप से स्वयं स्पेन और रोम में । पौलुस ने महसूस किया कि *अब वह समय आ गया है* (रोमियों 1:10)।

इसलिए पौलुस ने अपनी रोमियों की पत्री को 57 ई.प. अपनी तीसरी मिश्नरी यात्रा के अन्त में लिखा।

3. पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के सम्बन्ध में तारीखें।

पौलुस की तीसरी मिशनरी यात्रा के समय का अनुमान फेलिक्स और फेस्टस के शासनकाल के द्वारा निर्धारित किया जा सकता है, जो यहूदिया के गर्वनर थे। फेलिक्स 52-29 ई. के बीच यहूदियों का शासक था और फेस्टस 59-61 ई. तक का शासक था। शासक बनने से पहले ही पौलुस 2 वर्ष के लिए बन्दी बनाया गया था (प्रेरितों. 24:27) । हालाँकि, पौलुस 57-59 ईस्वी तक कैसरिया में बन्दी था इसलिए तीसरी मिशनरी यात्रा का समय सन् 53-57 ई. के बीच का रहा होगा।

घ. रोमियों की पत्री का उद्देश्य।

1. पौलुस की इच्छा है कि वह व्यक्तिगत रूप से रोम में सेवा करें।

रोमियों 15:23 के अनुसार पौलुस रोमी साम्राज्य के पूर्वी भाग में अपनी सेवकाई को पूरा करते के करीब था, और रोमी साम्राज्य के पश्चिमी भाग में अपनी सेवकाई का आरम्भ करना चाहता था विशेषकर रोम और स्पेन में। पौलुस के मन में रोम में सेवकाई को लेकर विनम्र विचार थे और उसने कहा कि वह न केवल रोमी लोगों के बीच कटनी काटना चाहता है, परन्तु उनके विश्वास से व्यक्तिगत प्रोत्साहन भी प्राप्त करना चाहता है। फिर भी, वह रोम में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उत्सुक था (रोमियों 1:8-15)। वह निश्चित नहीं था कि वह रोम की यात्रा कर पायेगा कि नहीं, क्योंकि उसे सुसमाचार सुनाने के लिए पहले भी रोका गया था, और वह विशेष रूप से यरूशलेम में यहूदियों के विरोध के बारें में बहुत अच्छे से जानता था (प्रेरितों के काम 20:3,22-23)।

2. पौलुस ने रोम में मसीहियों को यहूदियों के हमलों से खुद की रक्षा करने में मदद की।

इस बात का अहसा कि सम्भवतः वह अपने भाईयों को रोम में कभी नहीं देख पाये, इसीलिए उसने प्रकार की पत्री को लिखा। इस पत्री की शैली इस बात कि भी याद दिलाती है कि पौलुस ने अपनी मिशनरी यात्राओं के दौरान यहूदी अविश्वासियों के साथ तर्क वितर्क भी किये थे (रोमियों 4:1, 6:1, 7:7, 8:31, 9:14,30)। पौलुस जानता था कि रोम की कलीसिया अन्यजाति लोगों के एक बहुसंख्यकों के बीच रहती है और वह ऐसे विरोधियों के खिलाफ मसीह विश्वास की रक्षा करने में मदद करना चाहता था और साथ ही साथ वह उन्हें मसीह के लिए जीतने में कलीसिया की मदद करना चाहता था।

रोमियों की पत्री वास्तव में मसीह सिद्धान्त की एक पूर्ण तस्वीर नहीं है। लेकिन पौलुस जानता था कि रोम में कलीसिया को क्या चाहिए। पवित्र आत्मा की अगुवाई में, उसने लिखाः

- रोमियों अध्याय 1–8 किस तरह से पापियों को बचाया जाता है। संसार में सभी मसीहियों को इस मसीही सन्देश की अर्थात इस मौलिक शिक्षा की आवश्यकता है।
- रोमियों अध्याय 9 से 11 यीशु मसीह की पहली आनन्द के बारें में इस्राएलियों (यहूदियों) के बारे में।
- रोमियों अध्याय 12–16 व्यावहारिक मसीह जीवन के बारे में, और अध्याय 14 में विशेष रूप से व्यवस्था के कुछ पहलुओं के बारे में।[3]
- 3. पौलुस ने रोम के मसीहियों को प्रेरित किया कि वे मसीह की तरह कैसे व्यवहार करें।

रोम, रोमी साम्राज्य की राजधानी था और एक बड़ा शहर था जहां रहने वाले कई राष्ट्रों के नागरिक थे। पौलुस ने मसीहियों को प्रेरित किया कि वह स्वयं एक–दूसरे के साथ, अपने शत्रुओं और रोमी सरकार के साथ कैसा व्यवहार रखें। उन्होंने यह भी सिखाया कि कैसे मज़बूत और कमज़ोर मसीहियों को एक–दूसरे से सम्बन्ध रखना चाहिए।

4. पौलुस ने स्पेन में अपनी मिशनरी यात्रा के लिए रोम के मसीहियों के सहयोग की इच्छा की थी।

रोमियों 15:24 में, उन्होंने लिखा कि उन्हें उम्मीद थी कि रोम की मण्डली उन्हें स्पेन की मिशनरी यात्रा में मदद करेगी।

क्योंकि पौलुस के पास रोमियों की पत्री को लिखने के कई उद्देश्य थे इसलिए कुरिन्थियों 9:22 और 10:31 के अनुसार कोई भी उनके उद्देश्य को अपने शब्दों साराशिंत कर सकता है, “मैं सब मनुष्यों के लिये सबकुछ बना दूँ कि किसी न किसी रीति से कई का उद्धार कराऊं और जो तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो सबकुछ परमेश्वर की महीमा के लिए करो। ”

---

[3] व्यवस्था को इब्रानी भाषा में “तोरह” और अरबी में “शरीया” कहा जाता है।

ड. रोम का विभाजन

रोमियों की पत्री को शीर्षक दिया जा सकता हैः

"रोमियों – परमेश्वर की धार्मिकता के बारे में सुसमाचार"

पत्री यीशु मसीह को चित्रित करती है जो परमेश्वर के सामने मसीहियों की धार्मिकता है।

रोमियों की पत्री का प्रसंग रोमियों 1:16-17 में लिखा गया है, "इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये परमेश्वर की सामर्थ है कि 'विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा'।"

1. सैद्धान्तिक भागः परमेश्वर की धार्मिकता पर विश्वास करें (रोमियों 1-11 अध्याय)।

इस भाग को चार खण्डों में विभाजित किया जा सकता हैः

(1) पहला खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता।

यह रोमियों अध्याय 1:1 से 3:20 तक लिखा गया है।

- रोमियों अध्याय 1 में, अन्यजाति के सम्पूर्ण पापों की तरफ ईशारा करना, पौलुस दिखाता है कि अन्यजाति को वास्तव में परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।
- रोमियों अध्याय 2 में, यहूदियों के पापों की तरफ ईशारा करता है पौलुस दिखाता है कि यहूदियों को भी वास्तव में परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।
- रोमियों अध्याय 3:1-20 में, वह निष्कर्ष निकालता है कि पाप और पाप की निंदा सार्वभौमिक है। पवित्र मानव धार्मिकता (चाहे व्यवस्था के धार्मिक कार्यों से अर्जित की गई हो या चाहे मनुष्य के अच्छे कार्यों से) संसार में मौजूद नहीं है!

(2) दूसरा खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता का तरीका।

यह रोमियों अध्याय 3:21 से 4:25 तक लिखा गया है।

- रोमियों अध्याय 3:21-31 में। पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर ने क्रूस पर यीशु मसीह द्वारा किए गए प्रायश्चित के बलिदान में अपनी धार्मिकता प्रकट की है। कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त कर सकता है।
- रोमियों अध्याय 4 में। पौलुस यह साबित करता है कि विश्वास के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता पुराने नियम के समय भी उद्धार का मार्ग था।

(3) तीसरा खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता के प्रभाव।

यह रोमियों 5 से 8 अध्याय में लिखा हुआ है।

- रोमियों 5 अध्याय में। परमेश्वर की धार्मिकता शान्ति और पूर्ण उद्धार के आशवासन जैसे फूल को पैदा करती है।
- रोमियों 6 अध्याय में। परमेश्वर की धार्मिकता पक्के तौर पर स्वेच्छा से पवित्र जीवन जीने से जुड़ी है।

- रोमियों 7 अध्याय में। मसीहियों को "यहूदी धर्म गुरुओं के द्वारा अनुवादित" व्यवस्था से मुक्त रखा गया है (रोमियों 7:1-6) कि हर एक पापी परमेश्वर के नैतिक व्यवस्था के कार्यो का अनुभव करता रहता है (रोमियों 7:7-13) और यह कि प्रत्येक मसीही अभी भी अपने वर्तमान शरीर में पाप की व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष का अनुभव कर रहा है (रोमियों 7:14-25)।
- रोमियों 8 अध्याय में। मसीही व्यक्ति पवित्र आत्मा के कार्य का अनुभव करता है। (रोमियों 8:1-27) और वह सभी में (पृथ्वी पर होने वाली सभी घटनाएं) एक विजेता से अधिक है उसके माध्यम से जो उससे प्रेम करता है (रोमियों 8:28-39)।

(4) चौथा खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता का देनेवाला।

यह रोमियों 9 से 11 अध्याय में लिखा हुआ हैः

- रोमियों अध्याय 9 में इस्राएल के अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के बावजूद, पौलुस परमेश्वर की धार्मिकता और विश्वासयोग्यता का संकेत देता है। परमेश्वर के द्वारा इस्राएल के अविश्वास और उसके परिणाम स्वरुप परमेश्वर द्वारा किये जा रहे तिरस्कार अन्तिम नहीं थाः हमेशा सच्चे और विश्वासयोग्य विश्वासियों का अवशेष बाकी है। (बाइबल के परमेश्वर और उसके मसीहा (मसीह में)(भजन संहिता 2:2)।
- रोमियों अध्याय 10 में पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर की धार्मिकता (केवल) यीशु मसीह में उपलब्ध है और (केवल) उन सभी को भी प्राप्त होती है जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं। भले ही वह यहूदी हो या गैर-यहूदी (अन्यजाति)। इस्राएल का अविश्वास, अनाज्ञाकारिता, परमेश्वर द्वारा अस्वीकृति मनमानी नहीं थाः परमेश्वर का निमन्त्रण (धर्मी ठहरना) संसार के सभी देशों के लिए दे दिया गया है। यह आज भी यहूदियों के लिए इतना ही विस्तृत है।
- रोमियों अध्याय 11 में बड़ी संख्या में गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) को बचाने के लिये परमेश्वर ने इस्राएल को *आंशिक* रूप से सख्त किया और वह बड़ी संख्या में यहूदियों को बचाने के लिए अन्यजातियों के उद्धार का उपयोग करता है (जो कि इस्राएल है)(रोमियों 11:11-24)। इस्राएल का अविश्वास और उसके परिणाम स्वरुप अस्वीकृति अंतिम नहीं थीः परमेश्वर न केवल अन्यजातियों में से पूर्णता (चुने हुओं की पूर्ण संख्या) को भी बचाएंगे, बल्कि यहूदियों के बीच पूर्णता (चुने हुओं की पूर्ण संख्या) को भी बचाएंगे इसका मतलब यह है कि वे सभी लोग जिन्हें परमेश्वर ने *संसार की उत्पत्ति के पहले* से चुना हुआ है (रोमियों 8:29; इफिसियों 1:4; 2थिस्सलुनीकियों 2:13; 2तीमुथियुस 2:9ख) *वह अपने संसार के इतिहास के दौरान* निश्चित रूप से यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे (रोमियों 8:30; 11:25-32; 2थिस्सलुनीकियों 2:14; 2तीमुथियुस 2:9क,10)।

2. व्यावहारिक भागः परमेश्वर की धार्मिकता अभ्यास करें (रोमियों अध्याय 12-16)।

यह हिस्सा दो खण्डों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) पहला खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता का दृश्य प्रदर्शन।

यह रोमियों अध्याय 12:1 से 15:13 में लिखा हुआ है।

- रोमियों अध्याय 12 सिखाता है कि परमेश्वर के आदर के साथ मसीह व्यवहार, अन्य मसीही और विरोधियों के साथ कैसा होना चाहिए।
- रोमियों अध्याय 13 सरकार पड़ोसी और मसीह के सम्बन्ध में मसीह के व्यवहार को सिखाता है।
- रोमियों अध्याय 14:1 से 15:13 तक एक दूसरे के प्रति मज़बूत और कमज़ोर विश्वासियों के व्यवहार को सिखाता है।

(2) दूसरा खण्डः परमेश्वर की धार्मिकता के सहकर्मी।

यह रोमियों अध्याय 15:14 से 16:27 में लिखा हुआ है।

- रोमियों अध्याय 15:14-33 पौलुस की अन्यजाति सेवकाई, नीति और योजनाओं का वर्णन करता है।
- रोमियों अध्याय 16 परमेश्वर की धार्मिकता में अन्य सहकर्मी का वर्णन करता है।

च. रोमियों की पत्री के मुख्य सन्देश जो रोमियों के लिए हैं

1. परमेश्वर अपने इतिहास को सभी लोगों पर प्रकट करता है।

परमेश्वर स्वयं को सृष्टि के द्वारा प्रकट करता है। वह अपने अस्तित्व या वास्तविकता और अपनी शक्ति को प्रकट करता है जो सृष्टि में देखी जा सकती है (रोमियों 1:19-20)। वह प्रत्येक मनुष्य के हृदय और विवेक में अपने नैतिक व्यवस्था को प्रकट करता है (रोमियों 2:14-15)। परमेश्वर ने लोगों के पापों के बारें में अपने न्याय को प्रकट किया है (उत्पत्ति 6:5,11-13), लोगों की उनकी सम्भावित देखभाल के माध्यम से (प्रेरितों के काम 14:17 और 17:24-28) और सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा (मत्ती 24:14)। क्योंकि परमेश्वर ने अपने अस्तित्व का खुलासा किया है और सब लोगों के लिए हैं। परमेश्वर को ना चाहने का एक भी व्यक्ति कोई बहाना नहीं बना सकेगा (रोमियों 3:11,19)।

2. इतिहास में सभी लोगों ने पाप किया है और उन्हें परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है।

“इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं” (रोमियों 3:23)। “पाप करने का अर्थ है परमेश्वर के आदर्श से परिपूर्ण होना और अपने जीवन के लिए परमेश्वर के लक्ष्य से चूक जाना जो परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति और विशेषताओं को व्यक्त करने के लिए है। इसलिए रोमियों 3:10-11 के अनुसार, एक राष्ट्र और दूसरे राष्ट्र के बीच कोई अन्तर नहीं।

हालांकि, कुछ लोग *अपनी नज़र में धर्मी* हो सकते हैं *और सोचते हैं कि स्वर्ग जाएंगे* क्योंकि वे धार्मिक व्यवस्था को बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं,[4] बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि के स्वभाव से एक भी मनुष्य धर्मी नहीं है। हालांकि लोग समझते हैं कि संसार में समस्याएँ हैं ऐसा कोई भी नहीं है जो वास्तव में परमेश्वर की दृष्टि में अपनी खेदजनक स्थिती को समझता हो। यद्यपि लोग वैज्ञानिक और दार्शनिक ज्ञान और उत्तर चाहते हैं, कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपनी सामर्थ से बाइबल के परमेश्वर की खोज करता हो, जो समझ का और उद्धार का स्रोत है।

क्योंकि इतिहास में सभी लोगों ने पाप किया, इतिहास में सभी लोगों को उद्धार की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह है कि वे उस धार्मिकता से वंचित रह गये जिसकी बाइबल के परमेश्वर को धर्मी ठहराये (उद्धार देने लिए) जाने के लिए आवश्यकता पड़ती है।

यीशु द्वारा कही बातों की तुलना करें, जो कोई उस पर विश्वास नहीं करता, *वह दोषी ठहर चुका,* इसलिए कि उसने परमेश्वर के इकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया (यूहन्ना 3:18)। "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु *परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है"* (यूहन्ना 3:36)। "यदि तुम नहीं विश्वास करते की मैं हूँ (मैं वही हूँ जो मैं होने का दावा करता हूँ) (वह है "मैं जो हूँ सो हूँ)(निर्गमन 3:14) तो तुम *अपने पापों में मरोगे* (यूहन्ना 8:24)।

3. लोग केवल विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहरेंगे।

मूसा ने लैव्यव्यवस्था 18:5 में कहा कि जो मनुष्य परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करेगा, वह "उसके द्वारा जीवित रहेगा" यहूदियों ने सोचा कि इसका मतलब यह है कि जिसने भी व्यवस्था[5] को उत्तम से उत्तमता से मानने की कोशिश की वह धर्मी ठहरेगा और वह स्वर्ग का उत्तराधिकारी बन जायेगा।[6] इसलिए यहूदियों ने परमेश्वर की पूर्ण व्यवस्था का पालन करने का प्रयास किया ताकि अपनी धार्मिकता को स्थापित कर सकें।

सोच गलत थी! वे भूल गए कि परमेश्वर ने जो माँग की थी वह सिर्फ व्यवस्था को मानने की *कोशिश करना ही* नहीं था बल्कि बाइबल के परमेश्वर की *व्यवस्था की सिद्ध आज्ञाकारिता को पूर्ण करना था!* मानव जाति के इतिहास में कोई भी पूरी तरह से और सिद्धता से परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने में सक्षम नहीं है! हर एक परमेश्वर के सिद्ध स्तर से रहित है! रोमियों 3:19-20 कहता है "हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन है, इसलिए कि हर एक मुंह बन्द किया जाए और सारा संसार परमेश्चर के दण्ड के योग्य ठहरे क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है।" याकूब ने कहा, "क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहर चुका है" (याकूब 2:10)। और पौलुस कहता है कि "इसलिए जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन है क्योंकि लिखा है कि जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता वह शापित है" (गलातियों 3:10)।

कोई भी व्यवस्था का पालन करने से धर्मी नहीं ठहराया जाएगा क्योंकि संसार के इतिहास मे कोई भी ऐसा वहीं है जिसने व्यवस्था का पूरी तरह से या सिद्धता से पालन किया है केवल प्रभु यीशु मसीह को छोड़कर (इब्रानियों 4:13)।

---

[4] धार्मिक नियम निम्न हैं: (1) विश्वास करें कि परमेश्वर एक है(2)प्रतिदिन तीन बार प्रार्थना करें,(3)विशेष अवसरों पर उपवास करें (4) अपनी कमाई का दशमांस दें (5) हर वर्ष तीन बार तीर्थ यात्रा करो।

[5] "व्यवस्था" में (1) दस आज्ञाओं में दिये गये नैतिक नियम है (निर्गमन 20:1-17), (2) खतना, सबत, पवित्र स्नान और बलिदान चढ़ाना, भोजन संबंधी, दशमांस देने जैसे आनुष्ठानिक नियम शामिल हैं (3) पवित्र युद्ध, वस्त्र चढ़ाना, विवाह और तलाक, बलात्कार और चोरी आदि दण्ड संहिता से जुड़े नियम शामिल हैं। इस्राएल में धार्मिक अगुवों ने इस तरह के 613नियमों को तैयार किया और उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था में जोड़ दिया। व्यवस्था को इब्रानी भाषा में 'तोरह' और अरबी भाषा में 'शरिया' कहा जाता है।

[6] "स्वर्गलोक के वासी" होने का अथ है: अनन्त जीवन के वारिस होना ; उद्धार पाना (रोमियों 10:2-5 को देखें)

यीशु मसीह व्यवस्था का अन्त है" (रोमियों 10:4) ताकि लोग व्यवस्था का पालन करने की कोशिश न करके, बल्कि यीशु मसीह पर विश्वास करके परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त कर सकें। वह पाप रहित था और उसने परमेश्वर की व्यवस्था की सभी मांगों को पूरा किया, जो कोई यीशु मसीह पर विश्वास करता है, उसे वह मुफ्त में उपहार के रूप में *यीशु मसीह की पूर्ण सिद्ध धार्मिकता* को प्राप्त करता है।

कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था का पालन कर या अच्छे काम करके *अपनी धार्मिकता* को प्राप्त नहीं कर सकता है। इसलिए रोमियों 3:8 कहता है कि "मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।"

रोमियों 4:1–5 से पता चलता है कि पुराने नियम में यह नहीं सिखाया गया कि लोग व्यवस्था के पालन करने के द्वारा धर्मी ठहराया जा सकते हैं। उत्पत्ति 15:6 कहता है "अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके *लेखे* में धार्मिकता गिना गया।" दो शब्दों से बेहतर "जमा करना" है "गणना करना","मढ़ना" या "कारण बताना" हाँलाकि धार्मिक लोग व्यवस्था के कामों के बारें में दूसरे लोगों के सामने डींग मार सकते हैं, लेकिन वे कभी नहीं कर सकते। वे परमेश्वर के सामने घमण्ड नहीं कर सकते! परमेश्वर ऐसे लोगों को धर्मी नहीं ठहराता है जो स्वयं को धर्मी ठहराते हैं बल्कि केवल उन लोगों को जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं।

यीशु इस बारे में क्या कहते हैं, इसकी तुलना करें:
"मैं मार्ग हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6, मत्ती 11:27–29)।
"अचम्भा न कर, कि मैनें तुझसे क्या कहा कि 'तुझे नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है'" (यूहन्ना 3:7)।

4. जो लोग विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराये गये हैं उनका अब परमेश्वर के साथ रिश्ता कायम हो गया है।

जो व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास करता है उसका अब परमेश्वर के साथ अब पुनः रिश्ता कायम हो गया है।

- "शान्ति" शब्द का पहला अर्थ है कि आप इस बात को बहुत निश्चित है कि अतीत में आपके सभी पापों को माफ दिया गया है कि तुम परमेश्वर की दृष्टि में पूरी तरह से धर्मी हो और परमेश्वर के साथ मेल मिलाप में रहो (रोमियों 5:1–2,10)।
- "शान्ति" शब्द का दूसरा अर्थ यह है कि वर्तमान समय में सभी बुराइयों को आपकी भलाईयों के लिए परमेश्वर द्वारा अधिकृत किया जा रहा है। आपके द्वारा सहन किये गये सभी कष्ट दृढ़ता, चरित्र और आशा को उत्पन्न करते हैं (रोमियों 5:3–5, 8:28)।
- "शान्ति" शब्द का तीसरा अर्थ यह है कि संसार में भविष्य की घटनाएं कभी भी मसीहियों को परमेश्वर से अलग नहीं कर सकती है। वह पाप के खिलाफ परमेश्वर के भविष्य के क्रोध से बचा हुआ है, और कोई भी और कुछ उसे उसके लिए परमेश्वर के प्यार से अलग नहीं कर सकता है (रोमियों 5:9,21,8:37–39 तुलना यूहन्ना 10:28)।

5. हालांकि पुराने नियम की व्यवस्था किसी भी व्यक्ति को धर्मी नहीं ठहरा सकत है, लेकिन इसका एक महत्वपूर्ण कार्य है।

व्यवस्था का पालन करने से किसी को भी धर्मी (उद्धार) नहीं ठहराया जा सकता (रोमियों 3:28)।

- व्यवस्था "एक दर्पण" के रूप में कार्य करती है जिसमें लोग अपने पापों को पहचानना सीखते हैं (रोमियों3:20)।
- व्यवस्था "एक आवर्धक काँच" के रूप में कार्य करती है जिससे लोग अपने विशालता और कुरूपता को देखते हैं (रोमियों 5:20)।
- व्यवस्था "एक न्यायधीश" के रूप में कार्य करती है जो सभी लोगों को *दोषी* ठहराने का कार्य करती है और उन दोषियों को परमेश्वर के प्रति जवाबदेह कर देता है (रोमियों 3:19)।
- व्यवस्था "एक स्कूल शिक्षक" के रूप में कार्य करती है जो लोगों को मसीह और मसीह की धार्मिकता कि आवश्यकता को दिखाता है (गलातियों 3:24)।
- व्यवस्था "एक मार्गदर्शक" के रूप में कार्य करती है जो लोगों को दिखाता है कि उन्हें मसीह जीवन कैसे जीना चाहिए (रोमियों 13:8-10)।
- और व्यवस्था "एक लगाम" के रूप में काम करती है जो लोगों के बीच हर तरह की दुष्टता को रोकती है (1तीमुथियुस 1:9-11)।
- लेकिन व्यवस्था "धर्मी ठहराये जाने" (उद्धार) के साधन के रूप में कभी कार्य नहीं कर सकती है।

6. धर्मी ठहराया जाना पूर्ण स्थिर रूप से पवित्रीकरण से जुड़ा हुआ है।

"धर्मी ठहराया जाने" का अर्थ है कि परमेश्वर एक विश्वासी को धर्मी *घोषित* कर देता है और उसके बाद वह उसे यीशु द्वारा किये गये क्रूस पर प्रायश्चित के आधार पर धर्मी मानकर ही व्यवहार करता है जो धार्मिकता विश्वासी को खाली हाथों से विश्वास के कारण प्राप्त होती है।

रोमियों 6 अध्याय में पवित्रीकरण शब्द की अर्थ धर्मी ठहराये जाने की प्रक्रिया से नहीं, वरन सभी के लिये एक बार में ही धर्मी ठहराये जाने की स्थिति से है। पवित्र का अर्थः बुराई से *अलग* होकर केवल परमेश्वर की दृष्टि में अच्छे काम को करने के लिए *समर्पित* होना है। मसीहीयों का रिश्ता एक बार पाप के कारण टूट गया था और उसने एक ही बार अपने आप को धार्मिकता के लिए सौंप दिया है। रोमियों 6:5-7 सिखाता है कि हर कोई जो विश्वास के द्वारा मसीह के साथ एकजुट हो गया है वह मृत्यु में एक हुआ है और निश्चित रूप से मसीह के साथ उसका पुनरुत्थान भी होगा। यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा उनके पुराने मनुष्यत्व को मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया है। ताकि उसकी शारीरिक देह अब उसके पापी स्वभाव से प्रतिबंधित और नियन्त्रण में न रहे। पाप करने के लिए अनैच्छिक अनिवार्य दासता निश्चित रूप से टूट गई है। पौलुस सिखाता है कि मसीहियत का वास्तविक स्वरुप और बनावट (लक्ष्य और रूप) जीवन के नए पन का उत्पादन करना है। पौलुस सिखाता है कि मसीह के साथ इस प्रकार की संगति का स्वभाव है। यह कि किसी भी व्यक्ति के लिए मसीह की मृत्यु के लाभों में साझा करना असम्भव है उसके पुनरुत्थान के लाभों में साझा किए बिना! मसीह के पुनरुत्थान के लाभों को साझा करने का मुख्य रूप से अर्थ है पृथ्वी पर पवित्र जीवन में मसीह के अनुरुप होना और मृत्यु के बाद आत्मा और शरीर की महिमामय अमरता के जीवन में

मसीह का दूसरा अनुरुप है (रोमियों 8:11)। दोनों नए जीवन में शामिल है जो मसीह के द्वारा हमारे पास आते हैं।

एक तरफ पौलुस सिखाता है कि किसी व्यक्ति के लिए मसीह की मृत्यु में स्थायी होना असम्भव है। बिना उसके पुनरुत्थान और जीवन के अनुरुप नहीं है। मसीह की शाब्दिक मृत्यु और आत्मिक मृत्यु और मसीहियों का पुनरुत्थान दूसरी ओर है इन दोनों के बीच एक आकस्मिक सम्बन्ध भी है। जिस प्रकार मसीह का पुनरुत्थान उसकी मृत्यु का निश्चित परिणाम था, इसलिए एक मसीही का पवित्र जीवन (अर्थात्, मसीह के साथ उसका पुनरुत्थान) उसके धर्मी ठहराये जाने का निश्चित परिणाम है (अर्थात्, मसीह के साथ उसका मरना) मसीह का पुनरुत्थान मसीहियों के पवित्रीकरण का निश्चित करता है। मसीही लोग मसीह के जीवन को साझा करते है क्योंकि वह अपनी मृत्यु में भी उन्हें साझा करता है। दूसरी ओर, पौलुस सिखाता है कि मसीही लोगों के लिए मसीह के जीवन के अनुरुप होना असम्भव है मसीह की मृत्यु की पुष्टि किए बिना।

एक मसीही को धर्मी ठहराने से पहले पवित्र किया जाए, जिस प्रकार मसीह की मृत्यु उसके पुनरुत्थान से पहले हुई थी, उसी प्रकार एक मसीही व्यक्ति का धर्मी ठहरना उसके पवित्र होने से पहले होना चाहिए एक मसीही व्यक्ति मसीह की मृत्यु में साझा करता है ताकि वह मसीह के जीवन में साझा कर सके। इस प्रकार रोमियों की पत्री सिखाती है कि धर्मी ठहराये जाने की स्थिति (हालात) अविछेद्दनीय है। यीशु मसीह कि पुनरुत्थान में मृत्यु मसीही व्यक्ति के धर्मी ठहराये जाने पवित्रता को एकदम विशेष है। यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा मसीही व्यक्ति यहाँ अभी, दो हजार साल पहले यरुशलेम में यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में साझा करता गया है।

7. मसीहियों को पवित्र आत्मा के द्वारा जीवन व्यतीत करना चाहिए।

“आत्मा में जीना” एक रहस्यमय अनुभव नहीं है, बल्कि एक दैनिक मज़बूत ज़िम्मेदारी है। इसका अर्थ पवित्र आत्मा के कामों पर अपना ध्यान लगाना (यीशु मसीह की आत्मा) इसका अर्थ बाइबल की शिक्षाओं पर मन लगाना होता है (रोमियों 8:5, तुलना यूहन्ना 14:26, 16:13-14, इफिसियों 6:17)। इसका अर्थ है, शरीर के कुकर्मों को मारना है(हर तरह के पाप जो मानव शरीर में व्यक्त होते हैं)(रोमियों 8:13)।

यही कारण है कि रोमियों 6:13 और 19 निवेदन करता है कि मसीही अब अपने शरीर के हिस्सों को दुष्ट कामों को करने के लिए उपकरणों के रूप में पेश न करें वरन उन्हें परमेश्वर की पवित्रता[7] की अगुवाई में उसे पसन्द आने वाले कामों को करने के उपकरण की तरह प्रस्तुत करें।

8. परमेश्वर सब बातों में सर्वश्रेष्ठ (सर्वशक्तिमान) शासक हैं।

परमेश्वर की संप्रभुता का अर्थ है कि परमेश्वर सम्पूर्ण जगत के राजा हैं, और कोई भी उसे इस संसार और हर मसीही के लिए उसकी योजना को आगे ले जाने से रोक नहीं सकता है।

---

[7]धार्मिकता ¾ वही कार्य करना जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक हों। यह पवित्रता की ओर हमारी अगुवाई करते हैं= वह जीवन जो पाप से फिर कर मसीह की समानता में परिवर्तित होने के लिए तैयार है।

संसार में जो कुछ भी होता है उसका उपयोग परमेश्वर द्वारा मसीहियों की भलाई के लिए किया जाता है (रोमियों 8:28) इस प्रकार, परमेश्वर अपनी संप्रभुता अपनी भलाई में सर्वोच्च है।

- वे सभी लोग जिन्हें परमेश्वर ने चुना है, वे उद्धार प्राप्त करेंगे (रोमियों 8:29-30)। इस प्रकार परमेश्वर सर्वोच्च है जिसमें वह बचाता है।
- संसार में ऐसा कुछ भी नहीं घट सकता जो एक मसीही व्यक्ति को परमेश्वर से या उसके लिये परमेश्वर के प्रेम को अलग कर सकें। (रोमियों 8:35-39) इस प्रकार, परमेश्वर अपने प्रेम में सर्वोच्च है।

9. परमेश्वर ने जो प्राप्त किया है उसके आधार पर लोग परमेश्वर की संतान बन जाते हैं।

- लोग परमेश्वर की संतान बन जाते हैं अपने मानव वंश से नहीं लेकिन *परमेश्वर के सर्वोच्च वायदे* के आधार पर (रोमियों 9:6-9)।
- लोग परमेश्वर की संतान बन जाते हैं, उनके कामों से नहीं लेकिन *परमेश्वर के सर्वोच्च चुनाव और बुलाहट के आधार* पर (रोमियों 9:10-13 तुलना 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14)।
- लोग परमेश्वर की संतान बन जाते हैं, मानवीय इच्छा, स्वतंत्र इच्छा या मानव चुनाव से नहीं बनें लेकिन केवल परमेश्वर की सर्वोच्चता के आधार पर (रोमियों 9:14-16 तुलना रोमियों 9:18)।

यही बात यीशु मसीह सिखाते हैं जब वह कहते हैं "कोई मेरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिसने मुझे भेजा है उसे खींच न ले" "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा" (यूहन्ना 6:37,44,65)।

10. परमेश्वर की योजना यहूदी और गैर-यहूदी(अन्यजाति) दोनों को उद्धार (धर्मी ठहराना) देने की योजना है।

- यहूदियों (इस्राएल) के अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के तिरस्कार ने विश्वास करने वाले अन्यजातियों के गड़बड़ी की स्वीकृति के कारण हुआ है (तुलना प्रेरितों के काम 13:44-58, रोमियों 11:11)।
- और विश्वास करने वाले अन्यजातियों के ग्रहण करने से यहूदियों पर विश्वास करने वाले लोगों से सामूहिक स्वीकारिता बड़ गई। एक बहुत बड़ी भीड़ हर देश से जिसे कोई गिन नहीं सकता उद्धार (इस्राएल सहित) प्राप्त करेगी। (तुलना प्रकाशितवाक्य 5:9-10, प्रकाशितवाक्य 9:9-10)।
- यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर (निर्वाचित) की "पूर्ण संख्या" के साथ-साथ इस्राएल भी वहा पहुंच जाएगा।(रोमियों 11:26-27)।

इस प्रकार, इतिहास मे हर पीढ़ी मे जिन लोगों को परमेश्वर ने अन्यजातियों और यहूदियों में से चुना है, उन्हें धर्मी (उद्धार प्राप्त) और महिमामान कहा जाएगा (रोमियों 8:29-30,33)।

लेकिन अविश्वासी अन्यजातियों और अविश्वासी यहूदियों को जैतून के पेड़ की जड़ से तोड़ा और काट दिया जाएगा (रोमियों 11:20-22) और परमेश्वर के राज्य के बाहर फेंक दिया गया (मत्ती 3:10,12, मत्ती 8:11-12, प्रकाशितवाक्य 21:8) जो कुछ भी पाप और जो बुरा करता है उसे छाँट कर परमेश्वर के राज्य से बाहर निकाल दिया जाएगा (मत्ती 13:41)। और स्वर्गदूत आऐंगे और दुष्टों को धर्मियों के मध्य से अलग करके उन्हें ददकते आग के भट्टी में फेंक देंगे (मत्ती 13:49-50)। परमेश्वर का राज्य उनसे ले लिया जाएगा और वे टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे, और कुचले जाऐंगे (मत्ती 21:43-44)।

11. परमेश्वर चाहते हैं कि मसीही रूपान्तरित हो जाए।

सभी मसीहियों को लगातार अधिक से अधिक मसीह समानता में बदलना चाहिए (रोमियों 12:1-3 और 13:14)।

रोमियों की पत्री सिखाती हैः

- यद्यपि परमेश्वर उद्धार (धर्मी ठहराया जाना) और जीवन के सम्बन्ध मे पहल करता है, प्रत्येक मसीही परमेश्वर की पहल का जवाब देने के लिए जिम्मेदार है रोमियों की पत्री सिखाती है कि मानवीय जिम्मेदारी के बिना कोई परमेश्वरीय चुनाव नहीं है।
- मानवीय जिम्मेदारी के बिना कोई परमेश्वरीय चुनाव नहीं है। चुनाव का सिद्धान्त मनुष्यों की जिम्मेदारी के सिद्धान्त से कभी भी अलग नहीं हो सकता है।
- पवित्रता की स्थिति में और पवित्रता की प्रक्रिया के बिना धर्मी ठहराए जाने की कोई स्थिति नहीं है। धर्मी ठहराए जाने का सिद्धान्त पवित्रता के सिद्धान्त से मानव मन या रोज के जीवन से अलग नहीं हो सकता है।
- एक मसीही को केवल उद्धार का आश्वासन तभी मिल सकता है जब वह भरोसा और आज्ञाकारिता में रहना जारी रखेगा।
- **12. परमेश्वर चाहता है कि मसीही लोग परमेश्वर द्वारा दिये गये सभी अधिकारियों कि अधीनता में रहें।**

सभी मसीहियों को उन अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने उनके ऊपर ठहराया है (रोमियों 13:1-7)।

बाइबल में परमेश्वर के सात आधिकारी हैंः-

- सारे और सबसे ऊपर परमेश्वर का अधिकार है (प्रकाशितवाक्य 1:5, 19:6, 1कुरिन्थियों 15:24-28)।
- रची हुई पृथ्वी के ऊपर मनुष्य का अधिकार (उत्पत्ति 1:28)।
- विवाह और कलीसिया में महिला के ऊपर पुरुष का अधिकार (इफिसियों 5:22-25, 1तीमुथियुस 2:11-12)।
- अपने नाबालिग बच्चों पर माता-पिता का अधिकार (इफिसियों 6:1-4)
- अपने कर्मचारियों पर नियोक्ताओं का अधिकार (इफिसियों 6:5-9)

- उसके नागरिकों पर <u>सरकार</u> का अधिकार (रोमियों 13:1-7, 1पतरस 2:13-18)।
- कलीसिया के सदस्यों पर <u>प्राचीनों के परिषद्</u> का अधिकार (प्रेरितों. 20:17,28, इब्रानियों 13:17)।

जब तक सरकार सर्वोच्च प्राधिकरण (परमेश्वर) के साथ टकराव न करें सभी नागरिकों को उनके ऊपर सिविल अधिकारियों के आधीनता में रहना पड़ेगा (प्रेरितों. 4:19-20, 5:29)। सभी मानवीय अधिकारियों का उचित तरीकों से विरोध किया जाना चाहिए जो परमेश्वर के अधिकार के विरोधी हैं। ध्यान दें "समुद्र से बाहर पशु" जो संसार के सभी मसीही विरोधियों, राजनीतिक संसार में में अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करता है (प्रकाशितवाक्य 13:1-10)।

13. <u>परमेश्वर चाहता है कि मसीही लोग अपने मतभेदों के साथ एक-दूसरे को स्वीकार करें।</u>

मसीही को आत्मा के विभिन्न वरदान मिले हैं। और इस प्रकार मसीह के देह में विभिन्न कार्य(काम) है। हर एक सदस्य के रूप में प्रत्येक मसीही अन्य सभी मसीहियों से सम्बन्धित है (रोमियों 12:3-8)।

मज़बूत मसीहियों को कमज़ोर मसीहियों के संदेह को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन केवल उस हद तक जहाँ तक कि वह बाइबल की सच्चाई से नहीं टकराती हो। और कमज़ोर मसीहियों को मज़बूत मसीहियों के विश्वासियों के निश्चय का खण्डन नहीं करना चाहिए लेकिन केवल इस हद तक लेकिन केवल वहां तक जहां तक उनके विचार बाइबल की सच्चाई के साथ टकराये नहीं (रोमियों 14:1-15:13)।